संतोषी माता अमृतवाणी | By Sanghamitra Chakraborty |

हे गणेश की मानस पुत्री
तुम संतोषी माता
उन्हें संतोष मिले भाव में जो
तुमको मैया ध्याता

तेरी भक्ति करना मैया
बहुत बहुत सुखदायी
राई को तुम पर्वत करती
पर्वत को करो राई

तेरे दरबार में मैया
हो निर्धन धनवान
ऐसे सींचो भक्तों को जैसे
माँ सींचे संसार

तुम हो एक शक्ति मैया
तेरी महिमा अपार
तुम ही भवसागर से करती
मैया बेड़ा पार

भक्तों पे आए संकट तो
संतोषी देती टाल
पल में विपदा हर लेती
कर देती है खुशहाल

इनकी पूजा से मिलता
भक्तों को ये वरदान
सुख सम्पत्ति उन्हें मिलती
और मिलती है संतान

सतिया का सत है संतोषी
है उनका अभिमान
इनकी पूजा से हो जाते हैं
पूरे सब अरमान

निर्मल निर्मल माँ संतोषी
उज्ज्वल इनके नैन
भक्तों को माँ देती है
धन बल सुख और चैन

जय संतोषी माँ
मेरी जय संतोषी माँ
जय संतोषी माँ
मेरी जय संतोषी माँ

जय जय जय संतोषी माता
गुण तेरे माँ जन-जन है गाते
तीनों लोक में गूँज तुम्हारी

ब्रह्मा विष्णु शिव तुम्हें ध्याते

मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ

तुम संतोषी करुणा का सागर
भरते हो भक्त दया की गागर
शक्ति तुम्हारी देवी समझी
प्रणाम करे वो शीश नवाकर
तुम निर्बल का बल हो मैया
उनकी नाव की तुम हो खेवैया
तुम संतान के अंदर रहती
बन संतोष मन में बसैया

मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ

दुलार करो मुझको भी मैया
पार इस भव से उतारो नैया
मैं धन दौलत माँगूँ नहीं माँ
गत को सुधरो मेरी मैया
हे मैया तेरे दर की है
बड़ी निराली शान
तेरे दर्शन को आते हैं
सुन मैया भगवान

भटके हुए को राह दिखाती
मंज़िल तक उनको पहुँचाती
दर्शन को शिक देर नहीं है
बिगड़ी हुई ये बात बनाती

मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ

दुखियों के दु:ख संतोषी हरती
नि:संतान की झोली माँ भरती
सतिया का सम्मान है माँ
पग-पग उनकी रक्षा करती
बैरी भावना मन में जो रखते
उन्हें दुलार नहीं है मिलती
पाप कभी न भली होता
बिना अगन में वो है जलते

मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ

गुड़ चने का माँ को भोग लगाओ
जीवन में यूँ सफलता पाओ
माँ संतोषी मन की है भोली
माँ के घर में ज्योत जलाओ
संतोषी तलवार से करती

दुष्टों का आ अंत
इसकी महिमा का गुणगान
गाते हैं जी संत

शुक्रवार का व्रत कर लो
अपने ही दु:ख खुद ही हर लो
फल देते सोलह शुक्रवार
अपने घर भंडार भर लो

मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ

संतोषी माँ बड़ी दयालु
रुकी गाड़ी को करती चालू
चारों दिशाओं में मैया जी मैया
मैया सा कोई नहीं कृपालु
माँ का मैं तो दास बनूँगा
माँ की सेवा खूब करूँगा
स्वर्ग है संतोषी चरणों में
मैं मन में संतोष धरूँगा

मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ

जो जन अमृतवाणी सुनेंगे
अपना जीवन सफल करेंगे
भरेगी माँ भंडार संतोषी
कभी नहीं उन्हें काँटे मिलेंगे
संतोषी जिस पर करे कृपा
करती बहुत अपार
चाहे तूफ़ान कितना तेज़ हो
कश्ती हो जाए पार

आए अगर कोई कठिनाई
दिखे तुम्हें चारों ओर तबाही
माँ संतोषी को तुम पुकारो
लाज बचा लेगी अपनी माई

मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ

एक संतोषी के रूप अनेक
देख सको तो माँ के देखो
जल थल नभ पाताल में
माँ की सत्ता है तीनों लोकों
माँ संतोषी के गुण जो गाते
श्रद्धा से माँ को शीश नवाते
पूरे करे मनोकामना माँ
शोक शत्रु से मुक्ति वो पाते

मेरी संतोषी माँ

मेरी संतोषी माँ

घर में घी का दीप जलाना
फिर तुम ढेरों लाभ कमाना
संतोषी करे वारे न्यारे
दौलत से यूँ भरो खजाना
भक्तों की हर मुश्किल का दे
संतोषी समाधान
फेर बदल कर किस्मत में माँ
कर देती है निदान

मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ
मेरी संतोषी माँ

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b8%e0%a4%82%e0%a4%a4%e0%a5%8b%e0%a4%b7%e0%a5%80-%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%a4%e0%a4%be-%e0%a4%85%e0%a4%ae%e0%a5%83%e0%a4%a4%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a4%a3%e0%a5%80-by-sanghamitra-chakraborty/